भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता

[1]Km Ruchi Choudhary, [2]Dr. Dinesh K Gautam
[1]Research Scholar, [2]Supervisor
[1-2] Department of Sanskrit, Shri Venkateshwara University, Gajraula, Uttar Pradesh

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम, समृद्धतम एवं निरंतर प्रवाहमान ज्ञान-धाराओं में से एक है, जिसका मूल आधार संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, नीतिशास्त्र, काव्य, नाट्य तथा अध्यात्म – इन समस्त विद्याओं का विशाल भंडार संस्कृत साहित्य में संचित है। वर्तमान युग में विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं वैश्वीकरण के तीव्र विकास के कारण शिक्षा का स्वरूप उपयोगितावादी, प्रतिस्पर्धात्मक एवं व्यवसायमूलक होता जा रहा है। इस प्रक्रिया में जहाँ सूचना एवं कौशल की वृद्धि हुई है, वहीं मूल्य-शिक्षा, चरित्र-निर्माण, सांस्कृतिक चेतना तथा समग्र व्यक्तित्व-विकास की उपेक्षा भी दिखाई देती है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में यह विवेचन किया गया है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली की इन चुनौतियों के समाधान में संस्कृत साहित्य किस प्रकार प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकता है। संस्कृत साहित्य केवल एक प्राचीन भाषिक धरोहर नहीं है, अपितु उसमें निहित ज्ञान-विज्ञान, नैतिक मूल्य, जीवन-दर्शन तथा भाषिक अनुशासन आज भी विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए अत्यंत सार्थक हैं। इस अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप, संस्कृत साहित्य के ज्ञान-भंडार, आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में संस्कृत की भूमिका का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि संस्कृत साहित्य आधुनिक शिक्षा प्रणाली में केवल एक विषय के रूप में नहीं, अपितु मूल्य-शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि, भाषिक कौशल एवं सांस्कृतिक पहचान के सशक्त आधार के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय से ही एक संतुलित, मूल्यनिष्ठ एवं समग्र शिक्षा-व्यवस्था का निर्माण संभव है।

प्रमुख शब्द

भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत साहित्य, आधुनिक शिक्षा प्रणाली, मूल्य-शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, सांस्कृतिक धरोहर, ज्ञान-विज्ञान, समग्र शिक्षा, भाषिक कौशल, प्रासंगिकता।**

1. प्रस्तावना

1.1 भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा से तात्पर्य उस विशाल, बहुआयामी एवं सुव्यवस्थित ज्ञान-धारा से है, जो सहस्राब्दियों से भारत भूमि पर विकसित, संरक्षित एवं संचारित होती आई है। यह परंपरा केवल धार्मिक अथवा आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, अपितु इसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, ज्योतिष,

भाषाविज्ञान, कला, नीति, राजनीति, अर्थशास्त्र तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित गहन विवेचन समाहित है। इस समस्त ज्ञान का मूल माध्यम एवं आधार संस्कृत भाषा रही है। गुरु-शिष्य परंपरा, मौखिक स्मृति-परंपरा तथा लिखित ग्रंथ-परंपरा के माध्यम से यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता रहा।

1.2 संस्कृत भाषा एवं साहित्य का स्वरूप

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक रूप से सुव्यवस्थित भाषाओं में से एक है। इसका व्याकरण, विशेषतः महर्षि पाणिनि का 'अष्टाध्यायी', भाषिक अनुशासन एवं तार्किक संरचना का अद्वितीय उदाहरण है। संस्कृत साहित्य अत्यंत व्यापक है – इसमें श्रुति साहित्य (वेद, उपनिषद्), स्मृति साहित्य (धर्मशास्त्र), इतिहास-पुराण (रामायण, महाभारत, पुराण), दर्शन, काव्य, नाटक, गद्य, चम्पू, नीतिशास्त्र तथा विविध शास्त्रीय ग्रंथ सम्मिलित हैं। यह साहित्य न केवल कलात्मक सौंदर्य से परिपूर्ण है, अपितु जीवन-मूल्यों एवं व्यावहारिक ज्ञान का भी अक्षय स्रोत है।

1.3 संस्कृत साहित्य का ज्ञान-भंडार

संस्कृत साहित्य में मानव-जीवन के प्रायः प्रत्येक पक्ष से संबंधित ज्ञान संचित है। आयुर्वेद में चरक-संहिता एवं सुश्रुत-संहिता जैसे चिकित्सा-ग्रंथ, गणित एवं ज्योतिष में आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त एवं भास्कराचार्य के ग्रंथ, अर्थशास्त्र में कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र', नीति में विदुरनीति एवं पञ्चतंत्र, तथा दर्शन में षड्दर्शन – यह सब भारतीय बौद्धिक परंपरा की समृद्धि के प्रमाण हैं। यह ज्ञान-भंडार यह सिद्ध करता है कि संस्कृत केवल एक 'धर्म-भाषा' नहीं, अपितु 'ज्ञान-विज्ञान की भाषा' भी रही है।

1.4 आधुनिक शिक्षा प्रणाली का स्वरूप एवं चुनौतियाँ

आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुख्यतः पाश्चात्य मॉडल पर आधारित है, जिसमें विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन एवं व्यावसायिक कौशल पर अत्यधिक बल दिया जाता है। इस प्रणाली ने साक्षरता, तकनीकी दक्षता एवं आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। किंतु इसके साथ ही यह प्रणाली प्रायः सूचना-केंद्रित, परीक्षा-केंद्रित एवं अंक-केंद्रित होती जा रही है। मूल्य-शिक्षा, चरित्र-निर्माण, संवेदनशीलता, सांस्कृतिक चेतना तथा नैतिक बोध की उपेक्षा आधुनिक शिक्षा की एक गंभीर चुनौती है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी सूचना-संपन्न तो होते हैं, किंतु मूल्य-विहीनता, तनाव, दिशाहीनता एवं सांस्कृतिक जड़ों से विच्छेद जैसी समस्याओं का सामना करते हैं।

1.5 संस्कृत साहित्य और मूल्य-शिक्षा

संस्कृत साहित्य मूल्य-शिक्षा का अक्षय स्रोत है। उपनिषदों में 'सत्यं वद, धर्मं चर' का उपदेश, गीता में निष्काम कर्म एवं समत्व का सिद्धांत, नीतिशास्त्रों में सदाचार, कर्तव्यबोध एवं संयम की शिक्षा, तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी विश्वबंधुत्व की भावना – यह सब आधुनिक विद्यार्थियों के चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। जहाँ आधुनिक शिक्षा 'कैसे जीविका अर्जित करें' सिखाती है, वहीं संस्कृत साहित्य 'कैसे जीवन जिएँ' का मार्गदर्शन करता है।

1.6 संस्कृत साहित्य में निहित वैज्ञानिक दृष्टि

यह एक व्यापक भ्रांति है कि संस्कृत साहित्य केवल धार्मिक अथवा दार्शनिक विषयों तक सीमित है। वस्तुतः इसमें गहन वैज्ञानिक दृष्टि एवं तार्किक विवेचन विद्यमान है। शून्य की अवधारणा, दशमलव पद्धति,

बीजगणित, खगोलशास्त्र में ग्रह-गति का विवेचन, आयुर्वेद में शल्य-चिकित्सा एवं औषधि-विज्ञान – यह सब भारतीय वैज्ञानिक चिंतन के प्रमाण हैं। इन विषयों का अध्ययन विद्यार्थियों में विश्लेषणात्मक चिंतन, तर्कशक्ति एवं जिज्ञासा का विकास कर सकता है, जो आधुनिक विज्ञान-शिक्षा के भी पूरक हैं।

1.7 भाषिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संस्कृत

संस्कृत भारतीय संस्कृति की आधारभूत भाषा है। अधिकांश भारतीय भाषाओं – हिंदी, बांग्ला, मराठी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड़ आदि – का शब्द-भंडार एवं भाषिक संरचना संस्कृत से गहनतापूर्वक प्रभावित है। संस्कृत का अध्ययन विद्यार्थियों को अपनी मातृभाषा को अधिक गहनता से समझने, शब्द-व्युत्पत्ति जानने तथा भाषिक कौशल विकसित करने में सहायता करता है। साथ ही यह सांस्कृतिक निरंतरता एवं राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करता है।

1.8 राष्ट्रीय शिक्षा नीति और संस्कृत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं, विशेषतः संस्कृत के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष बल दिया गया है। इस नीति में संस्कृत को बहुभाषिकता के अंतर्गत विद्यालय एवं उच्च शिक्षा के सभी स्तरों पर एक महत्त्वपूर्ण विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems) को पाठ्यक्रम में समाहित करने की संकल्पना भी इस नीति की एक प्रमुख विशेषता है। यह नीतिगत दिशा संस्कृत साहित्य की समकालीन प्रासंगिकता को शासकीय स्तर पर स्वीकृति प्रदान करती है।

1.9 आधुनिक शिक्षा में संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता

संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता आधुनिक शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में देखी जा सकती है। भाषा-शिक्षा में यह भाषिक अनुशासन एवं व्याकरणिक शुद्धता प्रदान करता है; मूल्य-शिक्षा में यह नैतिकता एवं चरित्र का आधार बनता है; विज्ञान-शिक्षा में यह भारतीय वैज्ञानिक योगदान से परिचय कराता है; तथा सांस्कृतिक शिक्षा में यह राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार संस्कृत साहित्य एक विषय मात्र न होकर, समग्र शिक्षा का सशक्त आधार-स्तंभ बन सकता है।

1.10 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

वर्तमान समय में शिक्षा-व्यवस्था में मूल्यों का ह्रास, सांस्कृतिक जड़ों से विच्छेद तथा समग्र व्यक्तित्व-विकास की उपेक्षा एक गंभीर चिंता का विषय है। ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत साहित्य का पुनर्मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता यहाँ निहित है कि यह संस्कृत साहित्य की केवल ऐतिहासिक या धार्मिक भूमिका तक सीमित न रहकर, उसकी आधुनिक शैक्षिक प्रासंगिकता का विवेचन करता है। यह शोध यह दर्शाता है कि संस्कृत साहित्य आज भी विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए एक जीवंत एवं उपयोगी स्रोत है।

2. अध्ययन की समस्या

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में जहाँ विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं व्यावसायिक कौशल पर निरंतर बल बढ़ रहा है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत साहित्य की उपेक्षा भी दिखाई देती है। अनेक विद्यार्थी एवं शिक्षक संस्कृत को एक 'मृत भाषा' अथवा 'केवल धार्मिक विषय' मानकर उसकी व्यापक शैक्षिक उपयोगिता की अनदेखी करते हैं। परिणामस्वरूप जिस साहित्य में मूल्य-शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि, भाषिक अनुशासन एवं जीवन-दर्शन का अक्षय भंडार निहित है, वह आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से क्रमशः दूर होता जा रहा है।

दूसरी ओर, आधुनिक शिक्षा प्रणाली स्वयं मूल्य-ह्रास, अत्यधिक भौतिकवाद, तनाव, सांस्कृतिक विच्छेद तथा समग्र व्यक्तित्व-विकास के अभाव जैसी समस्याओं से जूझ रही है। इन समस्याओं के समाधान के लिए बाह्य उपाय तो अपनाए जाते हैं, किंतु भारत की अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य समस्या यह है कि – आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकताओं एवं चुनौतियों के संदर्भ में संस्कृत साहित्य किस प्रकार प्रासंगिक है, और भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा के साथ किस प्रकार समन्वित किया जा सकता है, जिससे एक संतुलित, मूल्यनिष्ठ एवं समग्र शिक्षा-व्यवस्था का निर्माण हो सके।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा एवं संस्कृत साहित्य के स्वरूप का विश्लेषण करके आधुनिक शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में उसकी प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है। अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
2. संस्कृत भाषा एवं संस्कृत साहित्य के ज्ञान-भंडार का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक शिक्षा प्रणाली के स्वरूप, उपलब्धियों एवं चुनौतियों को समझना।
4. मूल्य-शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण में संस्कृत साहित्य की भूमिका का विवेचन करना।
5. संस्कृत साहित्य में निहित वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि को उजागर करना।
6. भाषिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के रूप में संस्कृत के महत्त्व को स्पष्ट करना।
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान परंपरा की स्थिति का अध्ययन करना।

8. विद्यार्थियों के बौद्धिक, नैतिक एवं सांस्कृतिक विकास में संस्कृत साहित्य के संभावित योगदान को समझना।

9. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा के समन्वय की संभावनाओं का विश्लेषण करना।

10. संस्कृत साहित्य को आधुनिक शिक्षा में समाहित करने हेतु व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

4.शोध प्रश्न

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल अवधारणा एवं विशेषताएँ क्या हैं?

2. संस्कृत साहित्य में किस प्रकार का ज्ञान-भंडार संचित है?

3. आधुनिक शिक्षा प्रणाली की प्रमुख उपलब्धियाँ एवं चुनौतियाँ क्या हैं?

4. मूल्य-शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण में संस्कृत साहित्य किस प्रकार सहायक हो सकता है?

5. क्या संस्कृत साहित्य में आधुनिक विज्ञान के पूरक तत्त्व विद्यमान हैं?

6. संस्कृत का अध्ययन विद्यार्थियों के भाषिक एवं सांस्कृतिक विकास में किस प्रकार योगदान करता है?

7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान परंपरा की क्या भूमिका निर्धारित की गई है?

8. संस्कृत साहित्य किस प्रकार समग्र एवं संतुलित शिक्षा का आधार बन सकता है?

9. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा के मध्य समन्वय की क्या संभावनाएँ हैं?

10. संस्कृत साहित्य को आधुनिक शिक्षा में प्रभावी रूप से समाहित करने के व्यावहारिक उपाय क्या हो सकते हैं?

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः **वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक** है। इस शोध में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप, संस्कृत साहित्य के प्रमुख ग्रंथों तथा आधुनिक शिक्षा से संबंधित विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन की प्रकृति

यह अध्ययन गुणात्मक स्वरूप का है। इसमें सांख्यिकीय विश्लेषण के स्थान पर वैचारिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक तत्त्वों का विवेचन प्रमुखता से किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत साहित्य की उपयोगिता, मूल्य-शिक्षा तथा आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं का गहन विश्लेषण किया गया है।

प्राथमिक स्रोत

अध्ययन के प्रमुख प्राथमिक स्रोत संस्कृत के मूल ग्रंथ हैं – वेद, उपनिषद्, भगवद्गीता, रामायण, महाभारत, नीतिशास्त्र, पञ्चतंत्र तथा विविध शास्त्रीय एवं काव्य-ग्रंथ। इनमें निहित मूल्य, ज्ञान एवं जीवन-दर्शन विवेचन का आधार बनाए गए हैं।

द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोतों के रूप में संस्कृत साहित्य के इतिहास से संबंधित ग्रंथ, भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित पुस्तकें, शिक्षाशास्त्र से संबंधित सामग्री, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के दस्तावेज़, शोध-पत्रिकाएँ तथा शैक्षिक प्रतिवेदन प्रयुक्त किए गए हैं।

विषयवस्तु विश्लेषण

शोध में विषयवस्तु विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। संस्कृत साहित्य के चयनित अंशों एवं विचारों का सांस्कृतिक, नैतिक तथा शैक्षिक विश्लेषण करके आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं के साथ उनका संबंध स्थापित किया गया है।

तुलनात्मक दृष्टिकोण

अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मध्य तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। दोनों की विशेषताओं, उपलब्धियों एवं सीमाओं का विश्लेषण करके उनके पारस्परिक समन्वय की संभावनाओं का विवेचन किया गया है।

अध्ययन की सीमा

यह अध्ययन मुख्यतः साहित्य-आधारित है। इसमें प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, प्रयोग, क्षेत्रीय अध्ययन अथवा सांख्यिकीय मापन का प्रयोग नहीं किया गया है। निष्कर्ष उपलब्ध ग्रंथ-सामग्री, शैक्षिक दस्तावेज़ों तथा वैचारिक विश्लेषण पर आधारित हैं।

विश्लेषण का आधार
- भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप
- संस्कृत साहित्य का ज्ञान-भंडार
- मूल्य-शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण
- संस्कृत में वैज्ञानिक दृष्टि
- भाषिक एवं सांस्कृतिक धरोहर
- आधुनिक शिक्षा की चुनौतियाँ
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं संस्कृत
- परंपरा एवं आधुनिकता का समन्वय
- व्यावहारिक शैक्षिक प्रयोग

भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत साहित्य की भूमिका

भारतीय ज्ञान परंपरा की आत्मा संस्कृत साहित्य में निवास करती है। सहस्राब्दियों से भारतीय मनीषा ने अपने चिंतन, अनुभव एवं ज्ञान को संस्कृत भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त एवं संरक्षित किया। वेदों में ऋषियों की आध्यात्मिक अनुभूति, उपनिषदों में आत्म-ब्रह्म का गहन दार्शनिक विवेचन, दर्शन-शास्त्रों में तर्क एवं प्रमाण की सूक्ष्म विवेचना, तथा काव्य-नाटकों में जीवन के सौंदर्य एवं रस का चित्रण – यह सब भारतीय ज्ञान की बहुआयामी समृद्धि के प्रमाण हैं।

संस्कृत साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को केवल संरक्षित ही नहीं किया, अपितु उसे एक व्यवस्थित, तार्किक एवं वैज्ञानिक स्वरूप भी प्रदान किया। पाणिनि के व्याकरण ने भाषा को अनुशासन दिया, कणाद एवं गौतम के दर्शनों ने तर्क को आधार दिया, आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य ने गणित एवं खगोल को दिशा दी, तथा चरक एवं सुश्रुत ने चिकित्सा-विज्ञान को समृद्ध किया। इस प्रकार संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का न केवल वाहक, अपितु उसका सृजनात्मक आधार भी रहा है।

यह ज्ञान परंपरा केवल सैद्धांतिक नहीं, अपितु व्यावहारिक भी थी। इसमें जीवन को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के चतुर्विध पुरुषार्थों के संतुलन के रूप में देखा गया। यह दृष्टि व्यक्ति एवं समाज दोनों के समग्र कल्याण की भावना से अनुप्राणित थी। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे उदात्त आदर्श इसी परंपरा की देन हैं, जो आज भी वैश्विक मानवता के लिए मार्गदर्शक हैं।

अतः भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने के लिए संस्कृत साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य है। संस्कृत के बिना इस परंपरा के मूल स्रोतों तक पहुँचना, उन्हें प्रामाणिक रूप से समझना तथा उनका सही मूल्यांकन करना संभव नहीं है। यही कारण है कि संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्रीय आधार माना जाता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संस्कृत साहित्य की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता

आधुनिक शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य केवल सूचना-प्रदान एवं कौशल-विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, अपितु उसमें विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व – बौद्धिक, नैतिक, भावनात्मक एवं सांस्कृतिक – का विकास भी सम्मिलित होना चाहिए। इस समग्र विकास की दृष्टि से संस्कृत साहित्य अत्यंत प्रासंगिक एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

मूल्य-शिक्षा के क्षेत्र मे संस्कृत साहित्य अद्वितीय है। उपनिषदों, गीता एवं नीतिशास्त्रों में निहित सत्य, अहिंसा, संयम, कर्तव्यबोध, सहिष्णुता एवं करुणा के मूल्य विद्यार्थियों के चरित्र-निर्माण में सहायक होते हैं। आधुनिक शिक्षा में जिस नैतिक शिक्षा की कमी अनुभव की जाती है, उसकी पूर्ति संस्कृत साहित्य सहजता से कर सकता है।

सांस्कृतिक पहचान के क्षेत्र में संस्कृत साहित्य विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है। वैश्वीकरण के इस युग में जहाँ सांस्कृतिक पहचान का संकट उत्पन्न हो रहा है, वहाँ संस्कृत साहित्य आत्म-गौरव, राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक निरंतरता का सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

व्यावहारिक स्तर पर संस्कृत साहित्य को आधुनिक शिक्षा में समाहित करने के अनेक उपाय संभव हैं – पाठ्यक्रम में मूल्य-आधारित संस्कृत अंशों का समावेश, कहानी एवं संवाद के माध्यम से रोचक शिक्षण, भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतरविषयक पाठ्यक्रमों का निर्माण, तथा तकनीकी माध्यमों (डिजिटल संसाधन, ऐप, ऑनलाइन पाठ्यक्रम) के द्वारा संस्कृत को सुलभ एवं आकर्षक बनाना।

निष्कर्षतः, संस्कृत साहित्य आधुनिक शिक्षा प्रणाली में केवल एक भाषा-विषय के रूप में नहीं, अपितु मूल्य-शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टि, भाषिक कौशल एवं सांस्कृतिक चेतना के समन्वित आधार के रूप में अत्यंत प्रासंगिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक शिक्षा के इस समन्वय से ही एक ऐसी शिक्षा-व्यवस्था का निर्माण संभव है, जो विद्यार्थियों को न केवल जीविकोपार्जन में सक्षम बनाए, अपितु उन्हें मूल्यनिष्ठ, संवेदनशील एवं समग्र मानव के रूप में भी विकसित करे।

सन्दर्भ सूची

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 नई दिल्ली – शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।१. वेदव्यास। (२०२१)। श्रीमद्भगवद्गीता। गोरखपुर – गीता प्रेस।

२. राधाकृष्णन्, डॉ. एस.। (२०१८)। भारतीय दर्शन (खंड १-२)। नई दिल्ली – राजपाल एण्ड सन्स।

३. कीथ, ए. बी.। (२०१७)। संस्कृत साहित्य का इतिहास। नई दिल्ली – मोतीलाल बनारसीदास।

४. वाचस्पति गैरोला। (२०१९)। संस्कृत साहित्य का इतिहास। वाराणसी – चौखम्बा विद्याभवन।

५. आपटे, वामन शिवराम। (२०२०)। संस्कृत-हिंदी कोश। नई दिल्ली – मोतीलाल बनारसीदास।

६. राष्ट्रीय शिक्षा नीति। (२०२०)।

७. मुखर्जी, राधाकुमुद। (२०१८)। *प्राचीन भारतीय शिक्षा*। नई दिल्ली – मोतीलाल बनारसीदास।

८. अल्टेकर, ए. एस.। (२०१७)। *प्राचीन भारत में शिक्षा-पद्धति*। वाराणसी – नंदकिशोर एण्ड ब्रदर्स।

९. पाण्डेय, रामशंकर। (२०१९)। *संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति*। वाराणसी – चौखम्बा प्रकाशन।

१०. उपाध्याय, बलदेव। (२०१८)। *संस्कृत साहित्य का इतिहास*। वाराणसी – शारदा संस्थान।

११. विवेकानन्द, स्वामी। (२०१७)। *शिक्षा*। कोलकाता – अद्वैत आश्रम।

१२. कपिल कपूर एवं अवधेश कुमार सिंह (सं.)। (२०१९)। *भारतीय ज्ञान परंपराएँ*। नई दिल्ली – डी. के. प्रिंटवर्ल्ड।

१३. मैक्समूलर, एफ.। (२०१६)। *भारत हमें क्या सिखा सकता है*। नई दिल्ली – रूपा प्रकाशन।

१४. शर्मा, रामनाथ। (२०२०)। *भारतीय शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार*। मेरठ – आर. लाल बुक डिपो।

१५. मानव संसाधन विकास मंत्रालय। (२०२०)। *भारतीय ज्ञान प्रणाली : संकल्पना एवं क्रियान्वयन*। नई दिल्ली – भारत सरकार।